प्रातःक्लास 5.4.68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?''

ओमशान्ति। रूहानी बच्चे यहां बैठे हैं, बुद्धि में यह ज्ञान है कैसे शुरू में हम ऊपर से आते हैं। जैसे दिखलाते हैं विष्णु अवतरण का खेल। विमान में बैठ कर फिर नीचे आते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो अवतार जो कुछ दिखलाते हैं वह सभी कितनी रांग है। भक्तिमार्ग में जो शिक्षा मिलती है वह कितनी रांग है। अभी तुम समझते हो आत्माएं हम कहां के रहने वाले हैं, कैसे ऊपर से फिर आते हैं, यहां कैसे 84 जन्मों का पार्ट बजाते पतित बने हैं। अभी फिर बाप पवित्र बनाते हैं। यह तो ज़रूर तुम सभी स्टूडेन्ट के बुद्धि में होना चाहिए। 84 का चक्र हम कैसे लगाते हैं वह स्मृति में रहना चाहिए। बाप ही समझाते हैं तुम कैसे 84 जन्म लेते हो। कल्प की आयु को लम्बा–चौड़ा टाइम देने कारण इतनी सहज बात भी मनुष्य समझते नहीं हैं; इसलिए भारतवासियों को ब्लाइन्डफेथ कहा जाता है। जो भी और सभी धर्म हैं वह कैसे स्थापन होते हैं यह भी तुम्हारी बुद्धि में है। तुम जानते हो पुनर्जन्म लेते–2 पार्ट बजाते–2 ताकि अभी अंत में आकर पहुँचे हैं। अभी फिर वापस जाते हैं। यह नॉलेज तो तुम बच्चों को ही है। दुनियां में और कोई यह नॉलेज नहीं जानते। कहते भी हैं 5000..... पहले पैराडाइज़ था ; परन्तु वह क्या था यह नहीं जानते। ज़रूर आदि सनातन देवी–देवताओं का ही राज्य (हो)गा; परन्तु यह बिल्कुल ही जानते ही नहीं। जैसे धुंधकारी होते हैं ना। तुम समझते हो हम भी पहले कितने अन्दर में थे। कुछ नहीं जानते थे। और धर्म वाले ऐसे थोड़े ही हैं। अपने धर्म स्थापक को नहीं जानते हैं। ..... गपोड़े लगा दिये हैं; क्योंकि पत्थर बुद्धि अनजान हैं। तुम अभी जानू नॉलेजफुल हो। बाकी सारी दुनियां बाप....अनजान है। हम कितने समझदार बने थे। अभी बेसमझ अनजान हो गये हैं। मनुष्य होकर अथवा आ जावेंगे। कर हम कुछ नहीं जानते थे। अभी बाबा ने आकर हमको कितनी नॉलेज दी है। नॉलेज का प्रभाव में ताकत रहेगी। यह तुम ही जानते हो। तुम बच्चों को अन्दर में कितना गद–2 होना चाहिए। जब धारणा हो करते थे त(ो) गद–2 पना आये। तुम जानते हो हम शुरू–2 में कैसे आये, फिर कैसे शूद्र कुल से ब्राह्मण कुल में ट्रांसफर .....। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है सो तो तुम्हारे सिवाय दुनियां में और कोई भी नहीं जानते। तो अन्दर ..... ज्ञान डांस होना चाहिए। बाबा हमको कितना वण्डरफुल नॉलेज देते हैं। जिस नॉलेज से हम अपना ..... हैं। लिखा हुआ भी है इस राजयोग से मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं; परन्तु कुछ भी समझ ..... आता था। अभी बुद्धि में सारा राज़ आ गया है। हम शूद्र से अभी सो ब्राह्मण बने हैं। यह मंत्र भी .....। हम सो शूद्र थे। अभी सो ब्राह्मण बने हैं, फिर हम सो देवता बनेंगे। फिर हम नीचे आये हैं। ..... चक्र लगाते हैं। यह नॉलेज बुद्धि में होने कारण खुशी भी रहनी चाहिए। औरों को भी यह चलते–2 ऐसी .....कितनी खयालात चलती है। कैसे सभी को बाप का परिचय देवें। तुम ब्राह्मण कितना (उ)पकार तो की हुई हो। बाप भी उपकार करते हैं। बिल्कुल ही अनजान, दुःखी हैं उन्हों को सदा सुखी बनावें। आंखें खोलें..... जिनको सर्विस का शौक रहता है उन्हों को अन्दर में आना चाहिए बहुत खुशी होनी .....हम आत्माएं कहां के रहने वाली हैं। फिर कैसे आते हैं पार्ट बजाने। कितने ऊँच बनते हैं। फिर कैसे .....फिर रावण राज्य शुरू कब होता है यह भी अभी बुद्धि में आया है। आगे तो जैसे बिल्कुल .... हैं। ....भक्तिमार्ग और ज्ञानमार्ग में रात–दिन का फ़र्क है। भक्ति से नीचे ही उतरते आये हैं। अभी ज्ञान मिला है। कोई भूल.....किसने की है। तुम कहेंगे पहले–2 हम आये तो बहुत ही सुख देखा। फिर हम भक्त बने। ..... फिर .... और पुजारी में कितना रात–दिन का फ़र्क है। भक्त लोग कितना खुश होते हैं। तुम समझते हो भकि(त) ..... उतरना ही है। भल कितने भी भक्ति करते–2 शिव पर वा किस पर कुर्वान हो जाये; परन्तु ..... उतरना ही है। एक कदम भी ऊपर नहीं जा सकते। तुम्हारे पास अभी कितना ज्ञान है। खुशी होना ..... कैसे हमने 84 का च(क्र) लगाया है। कहां 84 जन्म कहां 84 लाख जन्म कह दिया है। इतनी छोटी

सी बात भी किसके ध्यान में नहीं आता। लाखों वर्ष की भेंट में यह तो जैसे एक/दो रोज़ के बराबर हो जाता है। अच्छे–2 बच्चों की बुद्धि में यह चक्र फिरता रहता है। तब ही कहा जाता है स्वदर्शनचक्रधारी बच्चे। कृष्ण स्वदर्शनचक्रधारी नहीं था। सतयुग में यह नॉलेज होती नहीं। स्वर्ग का कितना गायन है। वहां सिर्फ़ भारत ही था। जो था वह फिर बनना ही है। बाहर से तो देखने में कुछ नहीं आता है। हां, सा. होता है। तुम जानते हो यह पुरानी दुनियां अभी ख़त्म होती है, फिर नम्बरवार हम नई दुनियां में आवेंगे। कैसे आत्माएं आती हैं पार्ट बजाने वह भी तो तुम समझ गये। आत्माएं कोई ऊपर से उतरती नहीं है। जैसे नाटक में दिखाते हैं ना। आत्मा को तो इन आँखों से कोई देख भी न सके। आत्मा कैसे आती है, छोटे शरीर में कैसे प्रवेश करती है बड़ा ही वण्डरफुल खेल है। यह ईश्वरीय पढ़ाई है ना। इसमें दिन–रात खयालात चलनी चाहिए। हम एक बार समझ लेते हैं जैसे कि देख लेते हैं, फिर वर्णन करते हैं। आगे जादू वाले लोग बहुत चीज़ें निकाल दिखाते थे। बाप को भी जादूगर, सौदगर ,रत्नागर कहते हैं ना। आत्मा में ही सारा ज्ञान ठहरता है। आत्मा ही ज्ञान सागर है। भल कहते भी हैं परमात्मा ज्ञान सागर है; परन्तु वह कौन वह जादूगर, रत्नागर है यह किसको भी पता नहीं। कृष्ण तो हो न सके। वह तो देहधारी मनुष्य है। उनको ज्ञान किसने दिया? तुम श्रीकृष्ण के 8(4) जन्म बताते हो तो भी मनुष्य बिगड़ते हैं। आगे तुम भी नहीं समझते थे। ईडियट्स थे। अभी बाप आक(र) बताते हैं। अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। एक बाप ही नॉलेजफुल है। हमको पढ़ाते भी हैं। यह....है। बच्चे ही जानते हैं। यह दिन–रात अन्दर में सिमरण चलना चाहिए। यह बेहद के नाटक का नॉलेज (सिवाय) बाप के और कोई सुना भी न सके। बाबा ने कुछ देखा थोड़े ही है; परन्तु उनमें सारी नॉलेज है। .....मैं सतयुग, त्रेता में तो नहीं आता हूं ; परन्तु नॉलेज सारी सुनाता हूं। वण्डर लगता है ना। .....ही नही लिया वह कैसे बतलाते हैं। बाप कहते हैं मैंने कुछ भी देखा नहीं है, न मैं सतयुग,त्रेता .....हूं; परन्तु मेरे में नॉलेज कितनी अच्छी है। जो मैं एक बारी ही आकर तुमको सुनाता हूं। बस। फिर (भक्तिमार्ग) में पार्ट चलता है। तुमने पार्ट बजाया तुम जानते ही नहीं हो। और जिसने पार्ट ही नहीं बजाया वह (भी) सुनाते हैं। वण्डर है ना। हम जो पार्टधारी है हम कुछ नहीं जानते और बाप में कितनी सारी नॉलेज है। (बाप) कहते हैं मैं थोड़े ही सतयुग/त्रेता में आता हूं, जो तुमको अनुभव सुनाऊँ। ड्रामा अनुसार बिगर देखे ..... नॉलेज देते हैं। कितना वण्डर है ना। मैं पार्ट बजाने आता ही नहीं और तुमको सारा पार्ट समझाता हूं। ..... ही मुझे नॉलेजफुल कहते हैं। तो बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों अभी अपनी उन्नति करनी है। अपन को तो ..... समझो। यह है खेल। तुम फिर भी ऐसे ही खेल करेंगे। देवी–देवता बनेंगे फिर चक्र लगाकर अंत में .....। वण्डर खाना चाहिए ना। बाबा में यह नॉलेज कहां से आया? उनका तो कोई गुरू भी नहीं। उन ..... ड्रामा के प्लैन अनुसार ज्ञान आई। पहले से ही उनमें पार्ट बजाने की नूँध है। इनको कुदरत कहेंगे। ..... बात वण्डरफुल है। तो बाप बैठ नई–2 बातें सुनाते हैं। ऐसे बाप को कितना याद करना चाहिए। 84 ..... भी याद करना है। 84 जन्मों का राज़ बाप ने ही समझाया है। विराट रूप का चित्र कितना अच्छा है ना। ..... विष्णु अथवा ल.ना. का चित्र बनाते हैं, वही दिखलाते हैं हम कैसे 84 जन्मों में आते हैं। ..... फिर क्षत्री, वैश्य, फिर शूद्र.....यह सिमरण करने में कोई क्या तकलीफ है। बाप है नॉलेजफुल। ..... न शास्त्र आदि ही पढ़ा है। बिगड़(र) कुछ भी पढ़े, बिगड़(र) गुरू किये इतनी सारी नॉलेज बैठ ..... ऐसा तो कब देखा नहीं। बाप कितना मीठा है। भक्तिमार्ग में कोई किसको, कोई किसको मीठा ..... जो आता है उसकी पूजा करने लग पड़ते हैं। बाबा बैठ सभी राज़ समझाते हैं। आत्मा ही आनन्द ..... फिर आत्मा ही दुःख रूपी छी–छी बन जाती है। भक्तिमार्ग में तो तुम कुछ भी नहीं जानते थे। ..... अच्छा

महिमा करते हैं; परन्तु जानते कुछ भी नहीं। कितना वण्डरफुल है। यह सारा खेल बाप ने ही समझाया है। इतने चित्र सीढ़ी आदि के कब देखे नहीं थे। अभी देखते हैं, सुनते हैं तो कहते भी हैं यह ज्ञान तो यथार्थ रीति है। काम महाशत्रु है यह सुनकर डिडर ही ढीली हो जाती है। कितनी माईयां भी कहां–2 फंसी हुई हैं। नाम भी हैं ना पूतनाएं ,अकासुर, बकासुर, कंस जरासिंधी। पराई कन्याओं को, स्त्रियों को भगाने वाले प्रैक्टिकल में हैं। तुम कितना समझाते हो समझते ही नहीं हैं। कितनी मेहनत लगती है। यह भी जानते हो कल्प पहले जिन्होंने समझा था वही समझेंगे। दैवी परिवार के जितने बनने वाले होंगे उन्हों को ही धारणा होगी। तुम जानते हो हम श्रीमत पर अपनी राजधानी स्थापन करते हैं। बाप की डायरैक्शन है औरों को भी आप समान बनाओ। बाबा भी ज्ञान सुना रहे हैं। तुम भी सुना सकते हो। तो ज़रूर यह शिवबाबा का रथ भी सुना सकता होगा; परन्तु अपन को गुप्त कर देते हैं। तुम शिवबाबा को ही याद करते रहो। इनकी उपमा भी नहीं करनी है। सर्व क(ा) सद्गति दाता, माया के जंजीर से छुड़ाने वाला एक ही है। बाप कैसे बैठ तुमको समझाते हैं। तुम बच्चों के सिवाय और कोई को पता नहीं है कि रावण क्या चीज़ है। हर वर्ष जलाते ही आते हैं। एफजी तो दुश्मन का बनाया जाता है ना। यह और किसको पता नहीं है। तुमको भी पता पड़ा है। रावण भारत का दुश्मन है, जिसने भारत को क्या बना दिया है। कितना दुःख किया है 5विकारों रूपी रावण ने। बच्चों को अन्दर में यह आना चाहिए कैसे औरों को भी रावण से छु(ड़ा)वें? सर्विस हो सकती है तो प्रबन्ध करना है। बाप कहते हैं इनकी हुण्डी मैं सकारता हूं। ड्रामा में नूँध है। सर्विस का अच्छा चांस है तो ..... पूछने का भी नहीं रहता। बाप ने कह दिया है सर्विस करते रहो। मांगो कोई से भी नहीं। मांगने से मरना भला। आपे ही तुम्हारे पास आ जावेंगे। मांगने से सेन्टर उतना ज़ोर नहीं पड़ेगा। बिगड़(र) मांगे तुम सेन्टर जमा देंगे, आपे ही आते रहेंगे। उसमें ताकत रहेगी। जैसे बाहर वाले चन्दा इकट्ठा करते हैं ऐसे तुमको नहीं करना है। गांधी रामराज्य स्थापन करते थे तो माईयां क्या–2 जाकर देती थीं। समझते थे यह कोई अवतार है। अंधश्रद्धा थी ना। नतीजा क्या निकला? और ही रावण हो पड़ा। सीढ़ी तो नीचे उतरना ही है। वह कब भगवान कहा नहीं जाता। जो अपन को (भग)वान समझते हैं वह हिरण्यकश्यप जैसे दैत्य हैं। शिवोहम कह बैठकर अपनी पूजा कराते हैं। भक्तिमर्ग का प्रभाव बहुत है। ज्ञान तो है बीज। बीज रूप बाप बैठ तुमको ज्ञान देते हैं। बीज ही नॉलेजफुल है ना। वह जड़ बीज तो वर्णन कर न सकेंगे। तुम वर्णन करते हो। सभी बातों को समझ सकते हो। इस बेहद के झाड़ को कोई भी समझते नहीं। तुम अनन्य बच्चे जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप समझाते हैं माया भी बड़ी प्रबल है। कुछ सहन भी करना पड़ता है। कितने कड़े–2 विकार हैं। अच्छी–2 सर्विस करने वालों को चलते–2 ऐसी माया की चमाट लग जाती है, कहते हैं हम तो गिर गये। ढाका ऊपर चढ़ते–2 नीचे गिर पड़े तो की हुई कमाई चट हो जाती है। डण्ड तो ज़रूर मिलना चाहिए ना। बाप से प्रतिज्ञा करते हैं, ब्लड से भी लिख कर देते हैं फिर भी गुम हो गये। बाबा पक्का करने लिए देखते भी हैं। उनका कॉपी उनके माँ–बाप को भी भेज देते हैं। तुम्हारे बच्ची ने ऐसे–2 लिखकर दिया है फिर कहां बुद्धियोग जावे तो उनको यह प्रतिज्ञा पत्र दिखलाना। भगवान को लिखकर देते हैं। इतनी युक्तियां करते हुये भी फिर दुनियां तरफ बुद्धि चली जाती है। बाप कितना सहज समझाते हैं। पार्टधारी को अपने पार्ट का ही सिमरण करना चाहिए। अपना पार्ट को कोई भूल थोड़े ही सकते हैं। बाप तो रोज़ भिन्न–2 प्रकार से समझाते रहते हैं। तुम भी बहुतों को समझाते हो। फिर भी कहते हैं हम बाबा के पास सम्मुख जावें। बाबा का तो वण्डर है ना। रोज़ मुरली चलाते हैं। वह तो निराकार, नाम–रूप देश–काल तो है नहीं। फिर मुरली कैसे सुनावेंगे? वण्डर खाते हैं ना। फिर पक्के हो ..... हैं। दिल होती है ऐसा बाप वर्सा देने आये हैं उनसे तो मिलें। पहले–2 तो तुमको लिखना (चा)हिए ..... (कि)तने बाप हैं? एक है लौकिक, दूसरा है पारलौकिक। ए(क) है शरीर का बाप दूसरा है .....

उस बेहद के बाप को सभी याद करते हैं। हे दुःख हर्ता–सुख कर्ता। बाबा आप आवेंगे तो आप से ज़रूर स्वर्ग का वर्सा लेंगे। ऐसे बाप को तो तुम जानते ही नहीं हो। न जानने के कारण ही निर्धण के बन गये हो। बात ऐसी करनी चाहिए जो एकदम पानी कर देना चाहिए। बेहद का बाप 21 जन्मों का वर्सा देते हैं। तब तो तुम उनको याद करते हो। अभी बाप आये हैं, तुम बाप से वर्सा नहीं लेंगे। बाप को याद नहीं करेंगे। बाप को याद करने से ही तुम सतोप्रधान विश्व का मालिक तुम बन जावेंगे। पहले–2 ही एकदम पानी कर देना चाहिए। भल जोड़ा हो। जोड़ों को ही ज्ञान (दे)ना चाहिए। पवित्र रहेंगे तो बाप से वर्सा मिलेगा। पवित्र न रहेंगे तो बिल्कुल खाली खाते में। मेरा बनकर और फिर बाहर में जाकर ग्लानी कराते हैं तो चण्डाल का जन्म पा लेंगे। वह ठौर पा न सके। ठौर न पाते हैं तो फिर नीचे गिर पड़ते हैं। बाप बलवान है तो माया भी कम नहीं। बड़ी जबरदस्त है; इसलिए बाप कहते हैं खबरदार रहना। कहावत भी देते हैं अंगर बिठो.....रावण को चुहड़ा कहेंगे ना। क्या से क्या बना देती है। वह तो भार उठाते हैं, यह तो एकदम खाते हैं। गुरू नानक ने भी कहा है ना। गुरू अक्षर कहते हैं, सिर्फ़ नानक अक्षर कोई सुन ले तो उनको गुस्सा आ जावेगा कि यह गुरूनानक भी नहीं कहते हैं। अन्दर में तो समझते हैं सद्गति का गुरू एक ही बाप के सिवाय कोई (है) नहीं। वह तो सभी हैं शरीरधारी। यह बाप तो अशरीरी है। तुम्हारा सतगुरू जो है उनको कितनी नॉलेज है। कुछ भी शास्त्र आदि नहीं पढ़ा है। अनपढ़ होते भी मेरे में कितनी नॉलेज है। यह भी ड्रामा में पार्ट है। तुम बच्चों की बुद्धि में ही है। जो भी धर्मस्थापक आते हैं कोई को भी गुरू नहीं कह सकते। गुरू वह जो ज्ञान देवे। वापस ले जावे। सिवाय बाप के और कोई तो वापस ले जा नहीं सकते। बाप ही जब देखते हैं सभी अति दुःखी हुये हैं तब ही आकर सभी को ले जाते हैं। लड़ाईयों में देखो कितने मनुष्य मरते हैं। फिर वैराग्य भी आता है मेरे कारण इतने सभी को मौत हो रहा है। तुम बच्चे जानते हो इनका नाम ही है खूनी नाहक खेल। तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। तुम यह ज्ञान प्राप्त कर यह पद पाते हो। अन्दर में गुप्त खुशी होनी चाहिए। बाप है गुप्त। अभी हम जाते हैं सुखधाम। तो बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। श्रीमत से ही श्रेष्ठ बनेंगे। जो भ्रष्ट मत देते हैं उनका तो मुँह भी नहीं देखना चाहिए। उल्टी मत पर चला और गिरा। कर्मइन्द्रियों को भी बस(वश) करना है। नहीं तो यह कर्मइन्द्रियां बहुत धोखा देंगी। जितना खावेंगे तो घड़ी–2 दिल होगी चूड़ी का लड्डू और खाऊँ। मांगते रहेंगे; इसलिए पक्का हो याद में रह खाना चाहिए। ऐसे नहीं चीज़ देखी और खा ली। भल कोई प्रवाह(परवाह) नहीं है; परन्तु कर्मइन्द्रियों को बस करना है। यज्ञ का भोजन तो ज़रूर अच्छा ही मिलेगा। ऑलमाइटी बाबा ने भी सभी के अवस्थाओं की जांच करने लिए प्रोग्राम भेजा। 15 दिन सभी को छांछ और डोडा खावें। बुखार वाले हो वा कोई भी हो सभी को खाना है। ड्रामा में पार्ट था। कहा देखो मेरे हुकुम पर चले, कोई बीमार पड़ा क्या? कुछ भी नहीं। तो कर्मइन्द्रियों को बस भी करना है ना। बाबा का यज्ञ है। भोजन तो अच्छा ही मिलता है। बाप पर निश्चय नहीं है। बाप कहे यह करो कभी नहीं करेंगे। बाबा समझ जाते हैं बुद्धू है। बाप की पहचान नहीं है। बाबा इतना याद में नहीं रह सकता है जितना कि तुम बच्चे रह सकते हो। बैठे–2 क्या–2 हो जाता है। मम्मा चली गई, अभी उनका पार्ट दूसरा कोई थोड़े ही बजा सकता है। लॉ नहीं कहता। बच्चा भी राइट हैण्ड था, बहुत अच्छा पुराना अनुभवी था ,वह भी चला गया। उन जैसा अनुभवी तो कोई मिल भी नहीं सकता। तो वह भी खयालात इनको करना पड़ता है। कितनी खुशलात रहती है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। मीठे–2 रूहानी बच्चों ..... बाप का नमस्ते। ओमशान्ति। शिवबाबा याद है?